International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(1): 226-227

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(1): 226-227
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-11-2019
Accepted: 19-12-2019

Dr. Deepak Mishra
Sanskrit Department, Veer Bahadur Singh Purvanchal University Jaunpur UP, Prayagraj, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
Dr. Deepak Mishra
Sanskrit Department, Veer Bahadur Singh Purvanchal University Jaunpur UP, Prayagraj, Uttar Pradesh, India

संस्कृत कथा साहित्य में पर्यावरणीय चेतना के आयाम

Dr. Deepak Mishra

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृत कथा–साहित्य का विश्व साहित्य में अत्यन्त आदरणीय स्थान रहा है। अतिशयोक्ति न होगा यदि भारतीय कथा–साहित्य को विश्व कथा साहित्य का जनक कह दिया जाए। इसमें भारतीय जीवन, विचारधारा, कार्य–कलाप, नैतिकता, सामाजिकता की झाँकी प्राप्त होती है। अधिकांश कथा साहित्य में व्यक्ति विशेष का नाम न रखकर पशु–पक्षी या अन्य जीव को उनके प्रतीक रूप में रखा गया है। अतः आबालवृद्ध उनकी मनोहरता पर आकृष्ट होते हैं। इसमें शेर, चूहा, बिल्ली, गीदड़, कौवा, कछुआ, तोता आदि नीति–शिक्षा, आचार शिक्षा और कतर्व्योपदेश देते है।[1] कथा साहित्य का प्रणयन कर विश्व को अनुदानित करने में हमारे मनीषियों का अमूल्य योगदान है। उपनिषद् ग्रन्थों और पुराणों के द्वारा अस्तित्व में आकर भारतीय कथा साहित्य ने स्वयं को लोकव्यापी बनाने में अनुपम योगदान दिया। कथा साहित्य में बृहत्कथा, बृहत्कथामंजरी, कथासरित्सागर, सिंहासन द्वात्रिंशत, शुकसप्तति, कथा रत्नाकर आदि विशेष रूप से ख्यातिलब्ध हैं।

नीति कथाओं में प्रतिनिधि ग्रन्थ हितोपदेश एवं पं◈चतन्त्र हैं। 'प◈चतन्त्र' अपने मूलरूप में विद्यमान नहीं है।[2] नीति कथाओं का दूसरा संग्रह 'हितोपदेश' है जो कि 'प◈चतन्त्र' का ही संस्करण है और उसको बंगाल के राजा धवलचन्द्र के राजकवि नारायण पण्डित ने चौदहवीं शताब्दी के आस–पास रचा।[3] विण्टरनिट्स का कथन है कि संसार में अन्य किसी जाति के पास कदाचित इतना समृद्ध कथा साहित्य नहीं है जितना कि भारतीयों के पास। यही नहीं, विश्व के अन्य देशों में भी कहानी की परम्परा भारत से ली गई है। प◈चतन्त्र पशु कथाओं की परम्परा का सबसे अधिक लोकप्रिय ग्रन्थ है। काव्यशास्त्र में इसकी विधा निदर्शना बताई गई है। आधुनिक आलोचक इसे नीति कथा की विधा में रखते हैं।[4] हमारे कथा काव्यों में समृद्ध पर्यावरण की सुन्दर झाँकी अनेकशः स्थानों पर दिखाई पड़ती है। महादेव के सिर पर शुक्ल पक्ष की द्वितीय चन्द्रमा के समान कला ग◯ा के फेन के सदृश शोभायमान होती है। हितोपदेश के मंगलाचरण में शिव के प्रसाद से सज्जनों के सभी कार्य सिद्ध होने की अभिलाषा का क्या सुन्दर निरूपण है–

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादात्तस्य धूर्जटेः।
जाह्नवीफेनलेखेवे यन्मूर्ध्निः शशिनः कलाः।।[5] हितोपोदश–1 (मित्रलाभः)

प्रकृति और जीवों के परस्पर साहचर्यता की उत्कृष्टता का अनुपम उदाहरण, विशाल वृक्ष का वर्णन जो बहुत से जीव–जन्तुओं का आश्रयदाता भी है– अस्ति कस्मिंश्चित्प्रदेशे महान न्यग्रोपादपः। तत्र वायसदम्पती प्रतिवसतः स्म। अथ तयो प्रसवकाले वृक्षविवरात् निष्क्रम्य कृष्णसर्पः सदैव तदपत्यानि भक्षयति ततस्तौ निर्वेदात् अन्यवृक्षमूलनिवासिनं प्रियसुहृदं श्रृगालं गत्वा ऊचतुः।[6]

(प◈चतन्त्र–मित्रभेदः)

परोपकारी और श्रेयस्कर वृक्षों की प्रशंसा जीव–जन्तुओं और मानवों के उपकारक के रूप में विवेचित है जिसकी छाया में मृग शयन करते हों, जिसके पल्लव पक्षिसमूहों से आवृत्त हों, जिसके कोटर कीटों से युक्त हों, जिसकी शाखाओं पर वानर आश्रय ले रहे हों, जिसके पुष्परस का पान निःशंक मधुप कर रहे हों तथा जो अपने सब अंगों से बहुत से जीवों को सुख प्रदान कर रहा हो, वह वृक्ष प्रशंसनीय है–

छायासुप्तमृगः शकुन्तनिवहैर्विष्वग् विलुप्तच्छदः
कीटैरावृतकोटरः कपिकुलैः स्कन्धे कृतप्रश्रयः।
विश्रब्धं मधुपैर्निपीतकुसुमः श्लाघ्यः स एव द्रुमः
सर्वा◯बहुसत्वस◯सुखदों भूमारभूतोऽपरः।।[7] (मिश्रसम्प्राप्ति–2)

कहा भी गया है कि फल और छाया से युक्त किसी महान वृक्ष का ही आश्रय लेना चाहिए, क्योंकि कदाचित् वह वृक्ष दैवयोग से फलहीन भी हो जाय तो भी उसकी छाया तो कोई नहीं रोक सकता–

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात्फलं नास्ति, च्छाया केन निर्वायते।।[8] (विग्रहः–10)

जिसकी सभी इन्द्रियाँ क्षीण जो गई हों, ऐसे वृद्ध व्यक्ति की अनुपयोगिता का वर्णन प्रकृति के माध्यम से सूचित किया गया है–

शशिनीव हिमार्तानां, धर्मार्त्तानां खाविव।
मनो न रमते स्त्रीणां जराजीर्णेन्द्रिये पतौ।[9] (मित्रलाभः–121)

आज भी शिव कण्ठस्थ कालकूट का पान नहीं करते, कच्छप अपनी पीठ पर पृथ्वी धारण किये है, समुद्र प्रचण्ड वाडवानल को उदर में रखे हुए है। सुकृतीजनों के अ◌ीकरण का अनुपालन प्रकृति के उत्कृष्ट माध्यम से प्रदर्शित है–

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं,
कूर्मो बिभर्ति धरणीं खलु चात्मपृष्ठे।
अम्भोनिधिर्वहति दुःसहवाडवाग्नि–
म◌ीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।।[10]

वृक्ष पर रात बिताने के लिए मनुष्य तथा पशु को एक साथ आश्रय लेना जीवों की सहचार्यता का प्रतीक है–

अश्ववेगात्प्रयातस्य कथ◌िचतद्दूरमन्तरम्।
एकाकिनो वने तस्य वासरः पर्यहीयत।। [11] (मित्रद्रोह का फल)–80

ऋतुराज वसन्त के भूतल पर आगमन से वातावरण की सुन्दरता बढ़ी हुई प्रतीत होती है क्योंकि सुगन्ध ही जिसका दूत और भौरों की गुन्जार ही जिसका मंगलगान हो ऐसे सुखद अनुभूति से तो मानवचित्त च◌चल ही हो सकता है–

मलयानिलमारूढः कोकिलालापडिण्डिमः।
मल्लिकामोददूतश्च मधुपारवम◌लः।।
अन्यदा तु समायातो वसन्तः कालराट् क्षितौ।
मनोऽपि विक्रियां यस्मिन्याति संयमिनां किल।।[12]

नूतन पल्लवरूप सुन्दर दाँतों के दृश्यमान होने से मानो हँसता हुआ तथा नवपल्लवयुक्त आम के वृक्षों से सुशोभित वन की सुन्दरता दर्शनीय है–

वनमिदमङ्कुरितदन्त प्रहसन्तं।
कुत्रापि अङ्कुरितामैः श्रृ◌ारितम्।।[13] (शुकसप्तति–1.96)

कल्पवृक्ष की शाखा गरुड़ के बैठने से टूट गई किन्तु वृक्ष के नीचे बालखिल्य मुनि की तपस्या में विघ्न न उत्पन्न हो अतः गरुड़ ने उस शाखा को चोंच में ही रोके रखा। जनापवाद के भय से गरुड़ ने उस शाखा को समुद्र पर लाकर रख दिया और उसी शाखा की पीठ पर लंका निर्मित हुई। काल्पनिक अत्युक्ति का प्रकृति के माध्यम से सुन्दर योजना दर्शनीय है–

ततः स गरुडो गत्वा भक्ष्यावादाय तावुभौ।
महतः कल्पवृक्षस्य शाखायां समुपाविशत्।।
तां च शाखा भरात्सद्यो भग्नां च◌च्वा बभार सः।
अधः स्थिततपोनिष्ठबालखिल्यानुरोधः।।
लोकोपमर्दभीतेन तेनाथ पितुराज्ञया।
आनीय विजने व्यक्त्वा सा शाखेह मरूत्मता।। [14] (द्वितीय लम्बक 141–143)

कथा साहित्य में पर्यावरण की कमनीयता का अनेकशः सुन्दर समायोजन है। गरुड़ का तरुशाखा भग्न करने के बाद लोकापवाद से भयभीत होना, मानव श्रेष्ठ के लिए पर्यावरण के प्रति आस्था उत्पन्न कराने का द्योतक है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– डा0 कपिल देव द्विवेदी रामनारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद, संस्करण 2004 पेज–571
2. संस्कृत–साहित्य का इतिहास–वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण 2003 पेज–787
3. वही पेज–788
4. संस्कृत–साहित्य का अभिनव इतिहास– डा0 वल्लभ त्रिपाठी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण, 2011, पेज–345
5. हितोपदेश–श्री गुरूप्रसाद शास्त्री, आचार्य सीताराम शास्त्री पेज–1 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 1999
6. प◌चतन्त्र– श्री भारतीय योगी, संस्कृति संस्थान, बरेली, संस्करण 1972 पेज–105
7. वही पेज–220
8. हितोपदेश–गुरुप्रसाद शास्त्री, आचार्य सीताराम शास्त्री पेज–275
9. वही पेज–96
10. शुकस्तति– पं0 रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत सीरिज पेज 12 वाराणसी संस्करण–1996
11. कथासरित्सागर (प्रथम खण्ड)–केदारनाथ शर्मा सारस्वत पेज–64 बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, संस्करण, शकाब्द–1982
12. शुकसप्तति पं0 रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत सीरिज पेज 83 वाराणसी संस्करण–1996
13. वही पेज–173
14. कथासरित्सागर (प्रथम खण्ड)–केदारनाथ शर्मा सारस्वत पेज–190 बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, संस्करण, शकाब्द–1982